Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

17

ऋषि बशिष्ठक उपन्यासक मूल्यांकन

डॉ. जय शंकर झा
सहायक प्राध्यापक
(मधेपुर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,मधेपुर, मधुबनी)

सार-संक्षेप : उपन्यास मैथिली गद्यक एकटा सुपुष्ट अंग अछि । पद्यक क्षेत्रमे जएह महत्व महाकाव्यक अछि गद्यक क्षेत्रमे उपन्यास ओही महत्त्वक अधिकारी अछि । मैथिली साहित्यक अन्य विधाक तुलनामे उपन्यासक सृजन प्रकाशन एवं पठन-पाठनक विशेष प्रवृत्ति देखल जाइत अछि । एकर कारण अहि उपन्यासक मानव जीवन संग साक्षात् सम्बन्ध । समाजक यथार्थ स्थिति एवं ताहिमे जीबि रहल मानवक अन्तरंग एवं वाह्य जीवनक विविध परिदृश्यक अंकन करब उपन्यासक उत्कृष्ट पक्ष थिक। देखल जाय तं इएह तत्व वस्तुतः साहित्यकें सार्थकता प्रदान करैत अछि । ऋषि बशिष्ठ रचित उपन्यास 'कलशयात्रा' उपन्यास वर्तमानक सार्थक अंशकें उपस्थित क' पाठककें प्रेरित एवं प्रभावित करबाक कारणे महत्त्वपूर्ण अछि। उपन्यास विधाक आत्मा निवास करैत अछि उपन्यासकारक वैयक्तिक दृष्टिकोणमे, कारण उपन्यासमे आधुनिक युगक कोनो जटिल समस्याक समाधानस्वरूप उपन्यासकार अपन वैयक्तिक मत प्रगट करैत छथि आओर तकरा पाठकलोकनि द्वारा सहज स्वीकार्य बनयबाक हेतु मनोरंजक एवं निर्दुष्ट कथानकक रचना, सजीव चरित्रक निर्माण, उपयुक्त वातावरणक सृजन, मनोरम वर्णन वैभवक प्रस्तुति तथा भाषाक निराडंबर सहज प्रवाहक योजना आदि साधनक उपयोग सफलतापूर्वक भेल अछि। उपन्यासक शिल्प-शैली एवं कथा-वस्तुक सन्दर्भमे अनेको विद्वानलोकनिक अभिमत ओ टिप्पणी एहि आलेखमे वर्णन भेल अछि।

विशिष्ट शब्द : सुपुष्ट, सृजन, वैभव, निर्दुष्ट, निराडम्बर, मनोरम, वाह्य, उत्कृष्ट, दष्टिकोण, टिप्पणी, सहज-स्वीकार्य, अन्तरंग, प्रवाह, आन्तरिक, अधिग्रहण।

ऋषि बशिष्ठक उपन्यास 'कलश - यात्रा' शिल्प-शैलीक संग-संग अनेको स्तरपर चर्चाक लेल अनुकूल आ आवश्यक पोथी थिक। ई उपन्यास प्रौढ़ पाठकक लेल हिनक प्रथम थिक। ओना देखल जाय तँ पूर्वमे बाल-साहित्यमे तीन उपन्यास प्रकाशित छनि , मुदा प्रौढ़ साहित्यमे 'कलश-यात्रा' मात्र | 'कलश-यात्रा'क प्रकाशन 2019 ई. मे नवारम्भ प्रकाशन, मधुबनीसँ भेल अछि | एहि उपन्यासक प्रकाशनक किछुए दिनमे एकर चर्चा साहित्य-जगतमे जोर-शोरसँ होबय लागल | चर्चाक कएक टा तथ्य छैक, जाहिमेसँ एक छैक- विषय-वस्तुक उपस्थापन | शिल्प-शैली आ संवाद सेहो ! 'कलश-यात्रा' मैथिली साहित्यमे भूमि-आधिग्रहणक समस्यापर आधारित उपन्यास अछि | एहि उपन्यासमे जतेक घटना घटैत छैक, तकर केन्द्रमे भूमि-आधिग्रहणसँ उपजल व्यूह रहैत छैक | 'कलश-यात्रा' उपन्यासक सन्दर्भमे ' नवारम्भ द्वारा 5 दिसम्बर, 2020 मे आयोजित एकटा 'वेब-परिचर्चा' मे मैथिली साहित्यक निष्णात समालोचक डॉ. ललितेश मिश्र कहलनि अछि-"कलश-यात्रा' एक्कैसम शताब्दीक कमसँ कम बीस वर्षमे हमरा नजरिसँ जे उपन्यास गुजरल अछि , ताहिमे हमरा बुझने ई सर्वोत्तम उपन्यास थिक | कारण दू -तीन छैक | पहिल तँ ई जे राजनैतिक और सामाजिक चेतनाक अभिव्यक्ति एहिसँ पूर्वहुमे नहि, माने बीसम शताब्दीमे जे उपन्यास सभ लिखल गेलैए, ताहू सभमे चेतनाक एहन समर्थ आ दृढ़ अभिव्यक्ति प्रायः नहि भेल छैक | कलश-यात्रा समकालीन सामाजिक आ राजनैतिक चेतनाक अनुपम उपन्यास अछि | " 1डॉ. ललितेश मिश्र उपन्यासक सामाजिक आ राजनैतिक चेतनाक जे चर्च कयलनि अछि से उचिते ! राजनेतालोकनिक कुत्सित प्रयासें समाज कोना खण्ड-पखण्ड भ' रहल छैक तकर अनेको ज्वलंत उदाहरण आँखिक सोझाँसँ बरमहल गुजरैत अछि | उपन्यासक मूल कथ्यमे भूमि-अधिग्रहण अछि अवश्य, मुदा वर्तमान राजनैतिक वातावरणक उपस्थितिक संग | 'कलश-यात्रा' उपन्यासक प्रसंग डॉ. कमला नन्द झा 'मैथिली उपन्यास : समाज आ सवाल' पोथीमे लिखलनि अछि -"कलश-यात्रा' उपन्यास मूल रूपसँ भूमि-अधिग्रहणक समस्यापर आधारित अछि | कदाचित मैथिलीमे ई पहिल बेर भूमि-आधिग्रहण सनक देशव्यापी समस्याकें ई उपन्यास सम्बोधित करैत अछि | विगत दू-तीन दशकसँ भूमंडलीकरण जोर-जुलुमसँ कखनो सरकारी आवश्यकता हेतु त' कखनो उद्योग स्थापना हेतु किसानक आहार जमीनक अधिग्रहण होइत रहल अछि | भूमि-अधिग्रहणक समस्याकें उपन्यासकार अपन सूक्ष्म अंतर्दृष्टिसँ मिथिलामे हिन्दू-मुस्लिम आंतरिक सह-सम्बन्धक यथार्थकें जोड़ देलनि अछि | " 2 उपन्यासक अनेक विशेषता होइत छैक, ताहिमे एक विशेषता होइत अछि - कथाक विविधता | अर्थात एकटा झमटगर गाछ रहैछ, जकर तना मोटगर रहैछ आ अनेको ठाढ़ि-पात झबरल रहैत छैक | उपन्यासमे सेहो एकटा मूल कथाक संग-संग अनेको उपकथा चलैत रहैत अछि | ऋषि बशिष्ठ एहि उपन्यासमे प्रत्येक पात्रक चरित्र-चित्रण बहुत स्वाभाविकतासँ कयलनि अछि | कोनहुं पात्रकें अपन चरित्रक अनुकूल संवाद तँ उपन्यासक सुगंधिकें और महमहा दैत अछि | उपन्यासमे लोचन मास्टर आ लालटुनक बीच भेल संवादकें देखल जाय-"हं! बोलो लालटुन! ... कहां करेगा सो ठीक-ठाक बोलो , जो है सो !- कथी? से कहू ने मास्टर साहेब!- अरे पूछते हैं नाटक कहाँ करेगा ! गांव में आ कि मधबन्नी बाजार में, जो है सो !एखन किछु दशकसँ भूमि-अधिग्रहण देशक भाग-भागमे एकटा प्रमुख समस्या बनल अछि | कतहु प्राइवेट धन्ना सेठकें उद्योग लगेबाक लेल भू-अधिग्रहित भ' रहल अछि तँ कतहु सरकारी कार्यालय वा अन्य कोनो उद्यमक लेल | एहि भूमि-अधिग्रहणसँ प्रभावित भ' रहल अछि देशक किसान | ओ किसान जकरा 'अन्नदाता' क संज्ञा देल गेल

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

छैक | जखन किसानक पालामे भूमिए नहि रहतैक तँ ओ अन्न उपजायत कतय? अन्नक उत्पादनक लेल तँ भूमि चाहबे करी | ताहि प्रमुख समस्याकें केन्द्रमे राखि ऋषि बशिष्ठ 'कलश-यात्रा' उपन्यासाक रचना कयलनि अछि | 'कलश-यात्रा' मे भूमि-अधिग्रहणक अतिरिक्त जे समकक्ष समस्या अछि से थिक गाममे मन्दिर निर्माण आ तत्सम्बन्धी विभिन्न उत्सवक आयोजन | 'कलश-यात्रा'क प्रसंग डॉ. कमलानन्द झा लिखलनि अछि -"जहियासँ अयोध्यामे मन्दिर निर्माण हेतु गाम-गाममे ईंटा पूजनक धार्मिक रणनीति चलल तहियेसँ गामक साम्प्रदायिकरण शुरु भ' गेल | साम्प्रदायिकताक विषाक्त वायरस 'धर्म'क रथपर सवार भ' अबैत अछि | ऋषि एहि तथ्यकें कलात्मक सजगतासँ उद्घाटित कयलनि अछि | ओ ईहो स्थापित करबामे सफल रहलाह अछि जे शुद्ध धार्मिक वा भक्त साम्प्रदायिक नहि भ' सकैछ आ साम्प्रदायिक व्यक्ति धार्मिक नहि। " 4'कलश-यात्रा' उपन्यासक मादें डॉ. कमलानन्द झाक कथन बिल्कुल सत्य प्रतीत होइत अछि जखन देखैत छी जे कथा-नायक लालटुन आ हुनक संग देनिहार जगदू बाबू, लोचन मास्टर , अयोधी बाबा, इदरीस आदि धार्मिक अछि, मुदा साम्प्रदायिक नहि | एकर ठीक विपरीत अछि झुम्मर' जकरामे धार्मिकताक छूतियो नहि छैक' मुदा मन्दिरक मुख्य प्रबन्धक बनल अछि | ओ सरकारक दलाल बनि किसानक जमीन सेहो अधिग्रहण करबा रहल अछि आ दोसर दिस धर्मक नामपर गामकें दू फांक करबाक समस्त दाव-पेंच लगबैत अछि | 'कलश-यात्रा'मे ऋषि बशिष्ठ कथा-नायक लालटुनक प्रति एकटा लड़की पायलक प्रेमकें बहुत निश्छलताक संग देखौलनि अछि | युवक आ युवतीक बीच मैत्री-भावक अद्भुत चित्रण अछि उपन्यासमे | एहि प्रसंग निम्नलिखित उद्धरणकेँ देखल जाय -" पायल बातकें बदलैत बाजलि, ' तोरासँ किछु बात करबाक छल !" की ? बाज ने !" तों फेरसँ गाममे नाटक करबें ?" नाटक ? ... कतय? ... कोन अवसरपर ?" तों तँ तेना कहै छें जेना तोरा किछु बुझले नहि होउ !" तों कोन नाटकक बात करै छें ?'तों कोन नाटक करै छें नगर-नगर ?" हम तँ रंगमंचपर अभिनय करै छी ! ... ओना विद्वान सभ एहि दुनियाँकेँ रंगमंच कहैत छथि आ मनुक्ख-मात्रकें अभिनेता | "5लालटुनक उत्तर सुनि पायल अकच्छ होयबाक 'नाटक' करैत अछि | दोस्तीमे ई सभ एकदम स्वाभाविक व्यवहार थिक | मुदा, पायल तैयो आगां प्रश्न पुछिते रहैत छैक -" हम तोरा जकां नहि छी बाबू साहेब !' सिनेहमे दुनू ठोरकें सकुचा क' हाथ जोड़ि लेलक - 'कहबें तँ कह आ नहि तँ हम जिद्दो नहि करबौ! ... ठीके की, हमरा कहबे किए करबें ? "6'कलश-यात्रा' उपन्यासमे जतय कतहु लालटुन आ पायलक बीच वार्तालाप छैक से एकदम मैत्री-भावसँ रससिक्त | कतहु अन्य प्रकारक बात नहि भेटैत छैक | जेना एकटा मित्रकें दोसर मित्रक सुरक्षाक चिन्ता रहैत छैक' तहिना पायलकें छैक लालटुनक लेल | जखन कि पायल झुम्मरक बेटी छी जे सम्पूर्ण उपन्यासमे खलनायकक रूपमे चिन्हित अछि | दू विपरीत लिंगक मैत्रीक ई निश्छलता सेहो 'कलश-यात्रा' उपन्यासक एकटा नव दृष्टि थिक | एहि सन्दर्भमे डॉ. विभा कुमारी लिखलनि अछि -"आजुक सन्दर्भमे एकटा युवक आ एकटा युवतीकेँ देखिक' लोक अन्य तरहक अर्थ लगायब प्रारम्भ क' दैत अछि , तेहेन समयमे पायल आ लालटुनक मैत्रीक स्नेह एकटा उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि | प्रेमक एकटा एहनो स्वरूप छैक, जाहिमे कोनो दैहिक सम्बन्धक मोह-माया नहि छैक | मात्र छैक मैत्रीक कलकल-छलछल, निष्कलुष प्रेम |"7पायल आ लालटुनक संवाद एतेक सघनतासँ उपन्यासकार प्रस्तुत कयलनि अछि जे एक सांसमे पढ़ि जयबाक उत्कंठाकें जागृत करैत अछि | किछु उद्धरणकें देखब अनिवार्य अछि -" हमरा किछु कहबाक नहि , पुछबाक छल !" तँ पूछ ने !" पुछलियौ जे कहांदनि कृष्णाष्टमीमे अपना गाममे नाटक होइ छौ?" होइत हेतै! ... हमरा नहि बूझल अछि !" कहांदनि तोंरे निर्देशनमे नाटक भ' रहल छौ ! ... एहि बेर आर्केस्ट्रा नहि एतै कृष्णाष्टमी मेलामे!' पायलक दुनू ठोर सटले रहलै, मुदा भीतरसँ हंसबाक स्वर निकलि पड़लै | लालटुन मुस्कैत व्यंग्य कयलक - ' एखन तोरासं बेसी एहि गामक हाल दोसर के बूझि सकैए पायल | ... तोहर पिता गामक सर्वेसर्वा ! ... तोहर पिता राधाकृष्ण मंदिरक महामहिम ! ... तोहर पिता किसानक भाग्य-विधाता !"8संवादक सहजता आ कथा-तत्वक क्रमश: विश्लेषण 'कलश-यात्रा' उपन्यासमे बेजोड़ तरीकासँ प्रस्तुत भेल अछि | पात्रानुकूल भाषाक प्रयोग आ वेश-भूषाक चयन , तकिया-कलामक उच्चरण सेहो अपूर्व अछि | पात्रानुकूल भाषाक प्रयोगमे अयोधी मिसरक भाषा मैथिली साहित्यक लेल किछु अशिष्ट अवश्य छैक | ओना पात्रानुकूल भाषाक प्रयोगमे प्रसिद्ध नाटककार महेन्द्र मलांगियाक नाटक 'ओरिजिनल काम'क कम्पनी पात्रकें देखल जाय तँ अयोधी मिसर कनियो अशिष्ट नहि ! हिन्दी साहित्यमे काशीनाथ सिंहक 'काशी का अस्सी' देखल जाए जे कोना पात्रानुकूल भाषाक प्रयोग भेल छैक | मैथिली साहित्यमे उपन्यास अपन महत्व लगातार सिद्ध क' रहल अछि | 'कलश-यात्रा' एही श्रेणिक उपन्यासमेसँ एक अछि | एहि उपन्यासमे वातावरण आ परिस्थितिक विश्लेषण चमत्कारिक अछि | जेना - भोरमे राधाकृष्णक मन्दिरपर गीत बजैत अछि - 'भोर भयो गैय्यन के पाछे, तुने मधुबन मोहि पठायो |' जखन समय किछु आओर बितैत अछि तँ - 'श्री यमुनाजी का पानी बोले - श्री राधा-राधा ! ... श्याम-सुन्दर की बंशी बोले - श्री राधा-राधा |'आ जखन समय जुआन होइत अछि तँ - 'तुंही तो मेरी जान है राधा ... तुझी पे कुरबान मैं राधा ... रह ना सकूंगा तुझसे दूर मैं |'तहिना कलश-यात्राक प्रचारक हेतु जे गाड़ी गाममे निकालल जाइत अछि, जहिपर बैसल युवक कलश-यात्रामे भाग लेनिहारि सभक नाम लिखैत छथि, सेहो एहन दृश्य उपस्थापित करैत अछि जे पढ़लापर ओ दृश्य आंखिक सोझाँ सिनेमा जकां प्रदर्शित होबय लगैत अछि |'कलश-यात्रा ' उपन्यासक भाषिक-सौन्दर्य अद्भुत अछि | पूर्वहुमे पात्रोचित भाषाक सन्दर्भमे चर्च कयलहुं अछि, मुदा भाषिक चमत्कार कोना साहित्यकें उच्चतम गुणवत्ता प्रदान करैत छैक, तकर नमूना लेल एहि प्रसंगकें देखब आवश्यक अछि | सन्दर्भ छैक मुसहरी टोलसँ छागर चोरीक पंचैतीक | कोनो पात्रकें भाषा कोना जीवंत बनबैत छैक से देखल जाय -" मालिक, ई तोतरहबा हम्मर नाम झुट्ठे फंसबइ हए!" रे ... रे ... रे छौंड़ा! तो... तो... तो नै क ... क कहलही त ... के ... के ... के ?' रे तोतरहबा , हम ?' त ... त... त ... के ... के ?"9तहिना एकटा अन्य पात्र इदरीसकें देखल जाय | इदरीसक ऊपर हमला भेल छलैक, किएक तँ किसान

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

सभक संग भूमि-अधिग्रहणक विरोधमे ओहो प्रदर्शनमे भाग लेने छल | प्रसंग छैक - जखन लालटुन इदरीससँ भेंट करय जाइत छैक | देखल जाय ई प्रसंग -" इदरीस पुनः मोने-मोन उत्तर देबय लागल | एहि बेर मुदा ओकरा मुंहसं स्पष्ट आवाज़ निकलय लगलै - ' ऊ तीनू के त' तखनी तोरिक कहियो देखनहुं ना रहियै त' कौन बात के कानि रहे ? ... हं , मारैत बेरिया एतबा अबस्से बोलै ओ तीनू गोरा- साला , उगरबाद करता है ! ... साला नेता बनता है ! ... साला आग लगाता है | '" 10मैथिलीक विद्वानलोकनिक मानब छनि जे कथ्य ' काया' थिक आ भाषा सुन्दर 'वस्त्र ' | से ऋषि बशिष्ठ 'कलश-यात्रा ' उपन्यासमे प्रत्येक पात्रकें ओकर समाज आ वातावरणक अनुसार भाषा-रुपी सुन्दर वस्त्रसँ सुसज्जित कयने छथि |'कलश-यात्रा ' उपन्यासमे हिन्दू-मुस्लिमक बीच बनायल जा रहल दरारिकें सेहो बहुत निकटता आ कोमलतासँ व्यक्त कयलनि अछि | एहि राजनैतिक छल-छद्मकें चोट करैत एहि उपन्यासक सन्दर्भमे डॉ. कमलानन्द झा लिखलनि अछि -'" कलश-यात्राक' असमंजसता आजुक भारतीय राजनीतिक विलक्षण रूपक अछि | वैदिक जी कहैत छथि जे, ' ई शास्त्र विहित नहि अछि ? मुस्लिम महिला पुछैथ छथि - ' शास्त्रमे ई कत' लिखल अछि जे मुस्लिम स्त्री कलश नहि ल' जा सकैत अछि ? 'एहि ठामक स्थापत्य, वस्त्र-विन्यास , भोजन , साहित्य, कला सभ किछु दुनू धर्मक लोकक समवेत प्रयासक फल थिक | इएह थिक 'साझी-संस्कृति ', 'साझी विरासत'| एकरे नाम थिक मुकम्मल हिंदुस्तान | ऋषि अपन उपन्यास कलश-यात्रामे मुकम्मल हिंदुस्तानक पड़ताल करैत छथि |" 11 वर्तमान कालमे हिन्दू+मुस्लिमक बीच जाहि तरहें आक्रामकता देखाओल जाइत अछि आ राजनीतिक रूपसँ रोटी सेकल जाइत छैक , सामाजिक स्तरपर ओकर विपरीत सौम्यताक संग कठिन परिस्थितिकें ' 'कलश-यात्रा' उपन्यासमे सोझरायल गेल छैक | उपन्यासमे कलश-यात्रासँ जखन मुस्लिम समुदायक किछु युवतीकें रोकल जाइत छैक , तखन ओहि शिक्षित युवती सभक वैदिक जीक संग भेल संवाद भाव-विह्वलित करैत अछि | प्रस्तुत अछि ई प्रसंग -" वैदिक जी दिससँ कोनो उत्तर नहि पाबि नगमा बाजलि - ' दादू , की हमसभ एहि गामक सन्तान नहि छी ?'वैदिक जी किछु बाजाथि ताहिसँ पहिनहि मुन्ना तुरुछिक' बाजल - सन्तान छी तँ छी ! ... एहि पवित्र काजक लेल अहाँसभ जीरो छी ! ... अछोप ! " 12एतबे बातपर दुनू पक्षक लोक झगड़ा-झांटी हेतु तैयार भ' गेल | मुदा, ई घटना सामान्य छैक | आकर्षक छैक शिक्षित युवती आ वैदिक जीक संवाद | आ ताहि संवादक मध्य जखन रुकावट बुझाइत छैक तँ नजरानाक आग्रह देखबा योग्य अछि -" नजराना मजीदकें शान्त करैत बाजलि - ' चाचू जान ! हमरा सभकें पढ़ेलहुं-लिखेलहुं एही लए?'नगमा बैदिक जीसँ प्रश्न कयलक - 'दादू , की कहै छी हमरा सभकें ?'बैदिक जी परबोधैत बजलाह - ' ई परम्परा छियै बेटी ! ... ई हिन्दूक परम्परामे छै ! .... शास्त्र एहिमे तोरा सभकेँ शामिल होयबाक अधिकार नहि दैत छह |"13बैदिक जी जखन शास्त्रक उद्धरण दैत कहलखिन जे एहिमे मात्र हिन्दू स्त्री भाग ल' सकैत अछि , तखन युवतीलोकनिक तर्क मनोरम अछि -" स्त्री तँ स्त्री छैक .... ओहिमे हिन्दू कि आ मुस्लिम की ? ' नगमा बाजलि |' दादू ! एकटा बेटीक जन्ममे जतबे व्यथा हिन्दू माता सहैत छथि, ततबे मुस्लिम माता सेहो |' जरीना बाजलि |' वंश-परम्पराक रक्षा जहिना हिन्दू स्त्री करैत छथि, तहिना मुस्लिम स्त्री सेहो! नजराना बाजलि | " 14जखन एतबा भेलाक बादो ओ युवतीलोकनि बैदिक जीकें सहमत नहि क' पबैत छथि तँ नजराना बाजि उठैत अछि -" अहाँसभ कहैत छियैक जे सभ मनुष्यक जन्म ईश्वर दैत छथिन आ हमरा धर्ममे अल्लाहताला ! ... जखन सभक जन्म एकहि गोटा दैत छथिन तँ ई भेद किएक ? " वैज्ञानिक-क्रिया सेहो समाने होइत अछि दुनू स्त्रीमे ! ... कहां छै कोनो भेद! ... दुनूक देहक खूनक रंग एके छै दादू ! ... दुनूक लहूमे एके तत्व पाओल जाइत अछि | " 15एतेक विवेचनक बादो जखन बैदिक जी संतुष्ट नहि भ' पबैत छथिन तखन जे युवतीलोकनि प्रश्न करैत अछि से जाग्रत-समाजक लेल विचारणीय अछि -" ... जखन मुस्लिम पावनि-तिहार आ तीर्थ-बर्थमे हिन्दूकें शामिल होयबाक अधिकार छैक तँ हिन्दू धर्ममे सेहो एहन अधिकार हमरा सभक लेल अवश्य देल गेल हेतै दादू ! '" इफ्तार पार्टीमे हिंदू भाग लैत छथि कि नहि ? बाजू ने दादू !" अजमेर-शरीफमे दरगाहपर चादरि चढ़बैत छथि कि नहि ? "आ बैदिक जीकें एहि वाक्यकें कहैत एकटा नव बाट बनयबाक संकेत देखा पड़ैत अछि -अजमेर-शरीफक दरगाहपर हिंदूक चढ़ाओल चादरि जँ मौलाकें कबूल तँ हमर सिजदा सेहो राधाकृष्णकें कबूल | " 17' कलश-यात्रा ' गंगा-जमुनी तहजीबक अद्भुत आ अपूर्व उपन्यास अछि | ऋषि बशिष्ठक उपन्यास भलहि एक मात्र प्रकाशित भेलनि अछि , मुदा विषय-विस्तार आ वैश्विक परिदृश्यक लेल ई उचिते एतेक चर्चित आ प्रशंसित भेल अछि | ऋषि बशिष्ठक उपन्यास 'कलश-यात्रा' समग्रतामे विस्तृत शोधक मांग करैत अछि |

सन्दर्भ-सूची

1.मिश्र, ललितेश, 5 दिसम्बर 2020, वेबिनार, नवारम्भ (यूट्यूब)
2. 9. झा, डॉ. कमलानन्द, 2021, मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल, नवारम्भ, मधुबनी, पृ. -261
3. ऋषि बशिष्ठ, 2019, कलश-यात्रा, नवारम्भ, मधुबनी,पृ.-13
4. झा, डॉ. कमलानन्द, 2021, मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल, नवारम्भ, मधुबनी।
5. ऋषि बशिष्ठ, 2019, कलश-यात्रा, नवारम्भ, मधुबनी,पृ.-105
6. तत्रैव
7. झा, अजय नाथ (सम्पादक), 6 दिसम्बर 2022, मैथिली पुनर्जागरण प्रकाश (दैनिक)
8. ऋषि बशिष्ठ, 2019, कलश-यात्रा, नवारम्भ, मधुबनी,पृ.-106

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

9. तत्रैव, पृ.-48
10. तत्रैव, पृ.-96
11. झा, डॉ. कमलानन्द, 2021, मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल, नवारम्भ, मधुबनी, पृ.-262
12. ऋषि बशिष्ठ, 2019, कलश-यात्रा, नवारम्भ, मधुबनी,पृ.-152
13. तत्रैव
14. तत्रैव, पृ.- 153
15. तत्रैव
16. तत्रैव
17. तत्रैव